छाता/छत्र दान

छाता/छत्र दान का हमारे सनातन धर्म में बहुत महत्व है। छाता/छत्र दान को षोडश महादान में से एक बताया गया है। भूमि, आसन, जल, वस्त्र, फल, शास्त्र, दीपक, पान, छत्र, सुगंधित द्रव्य, पुष्प माला, फल शास्त्र खडाऊँ गौ सोना और चाँदी। ये **षोडश महादान** हैं
"भूम्यामनं जलं वस्त्रं प्रदीपोऽत्रं ततः परम्। ताम्बलच्छत्रगन्धाश्च माल्यं फलमतः परम्॥
शय्या च पादुका गावः काञ्चनं रजतं तथा। दानमेतत् षोडशकं प्रेतमुद्दिश्य दीयते॥"

छाता दान करने से दानदाता के सभी रोग दूर होते हैं उसको लक्ष्मी तथा अनेक पुत्र प्राप्त होते हैं।
छत्रस्य उत्तानाङ्गिरसो देवता सर्व्वव्याधिविनि- र्मुक्तत्वश्रीमत्त्वबहुपुत्तत्वप्राप्तिः फलम् ।

कुछ विद्वान घर/देवालय/गुरुकुल की छत को भी छत्र दान का ही स्वरुप मानते हैं

छाता दान मंत्र
इहामुत्रातपत्राणं कुरु मे केशव प्रभो ।
छत्रं त्वत्प्रीतये दत्तं ममास्तु च सदा शुभम् ।।
अर्थ है - केशव ! यह छाता मैंने आपकी प्रसन्नता के लिए दिया है। यह छाता मेरे लिए इस लोक तथा परलोक में धूप से रक्षा करने वाला हो, इसके दान से मेरा सदा कल्याण-मंगल होता रहे ।

मत्स्यपुराण अध्याय २५१ में उल्लेख मिलता है कि छत्र, समुद्र मन्थन से उत्पन्न हुआ जिसको वरुण द्वारा ग्रहण किया गया "***धन्वन्तरिञ्च जग्राह लोकारोग्यप्रवर्तकम्। च्छत्रं जग्राह वरुणः कुण्डले च शचीपतिः ।।***" तथा ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में छत्र दान से वरुण लोक प्राप्ति का उल्लेख मिलता है "***यो ददाति ब्राह्मणाय छत्रं च सुमनोहरम् । वर्षाणामयुतं सोऽपि मोदते वरुणालये ।।***"

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा चातुर्मास में छाता देने का अतिविशेष महत्व है।

महाभारत अनुशासन पर्व के अनुसार जो पुरुष छाता दान करता है उसे पुत्र और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, उसके नेत्र में कोई रोग नहीं होता और उसे सदा यज्ञ का भाग मिलता है ।
पुत्राञ्छ्रियं च लभते यश्छत्रं संप्रयच्छति। चक्षुर्व्याधिं न लभते यज्ञभागमथाश्नुते ॥

जो गर्मी और बरसात के महीनों में छाता दान करता है, उसके मन में कभी संताप नहीं होता। वह कठिन से कठिन संकट से शीघ्र ही छुटकारा पा जाता है।
निदाघकाले वर्षे वा यश्छत्रं संप्रयच्छति ।
नास्य कश्चिन्मनोदाहः कदाचिदपि जायते।
कृच्छ्रात्स विषमाच्चैव विप्र मोक्षमवाप्नुते ॥

छत्रदान करने वाला पुरुष किसी भी जन्म में राजवंश से अलग नहीं होता।

महाभारत अनुशासन पर्व के दानधर्म पर्व के अंतर्गत अध्याय 96 में छत्र की उत्पत्ति एवं दान की प्रशंसा का वर्णन हुआ है जिसके अनुसार भृगुश्रेष्ठ जमदग्नि मुनि जब सूर्य से उनकी किरणों द्वारा तपा हुआ मार्ग सुगमता पूर्वक चलने योग्य बनाने का समाधान पूछते हैं तो भगवान सूर्य ने उन्हें शीघ्र ही छत्र और उपानह दोनों वस्तुऐं प्रदान कीं। सूर्यदेव ने कहा- महर्षे! यह छत्र मेरी किरणों का निवारण करके मस्तक की रक्षा करेगा तथा चमड़े के बने ये एक जोड़े जूते हैं, जो पैरों को जलने से बचाने के लिये प्रस्तुत किये गये हैं। आप इन्हें ग्रहण कीजिये। आज से जगत में इन दोनों वस्तुओं का प्रचार होगा और पुण्य के सभी अवसरों पर इनका दान उत्तम एवं अक्षय फल देने वाला होगा। छाता और जूता- इन दोनों वस्तुओं का प्राकट्य- छाता लगाने और जूता पहनने की प्रथा सूर्य ने ही जारी की है। इन वस्तुओं का दान तीनों लोकों में पवित्र बताया गया है। इसलिये ब्राह्मणों को उत्तम छाते और जूते दिया करो। उनके दान से महान धर्म होगा। जो ब्राह्मण को सुन्दर छाता दान करता है, वह परलोक में सुखी होता है। वह देवताओं, ब्राह्मणों और अप्सराओं द्वारा सतत सम्मानित होता हुआ इन्द्रलोक में निवास करता है।

सिंह संक्रांति में ब्राह्मण को सुवर्ण सहित छाता दान करने का विशेष फल है।
कार्तिक में ब्राह्मण को छाता दान करने का विशेष फल है।
व्यतीपात योग में छाता दान करने का विशेष फल है।

शनिपीड़ा निवारण के लिए सड़क के किनारे बैठ कर जूते चप्पल बनाने जोड़ने का कार्य करने वाले व्यक्ति को एक नया छाता श्रद्धापूर्वक दान करें।
बृहस्पतिवार को ब्राह्मणों को छत्र दान करने से गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव दूर होते हैं।

श्राद्ध में पितरों के निमित्त छाता जरूर दान करना चाहिए।

श्राद्ध में छत्रदान विधि

1. छाता पर तीन बार इस मंत्र से पुष्पाक्षत छिड़के : ॐ छत्राय नमः ॥३॥
2. उत्तराग्र त्रिकुशा (दर्भबटु) की पुष्पाक्षत से तीन बार पूजा करे : ॐ ब्राह्मणाय नमः ॥३॥
3. छाते को कुशोदक से सिक्त करे ।
4. पुनः तिल, जल लेकर इस मंत्र से त्रिकुशा व तिल-जल; उत्तराग्र त्रिकुशा (दर्भबटु) पर दे – ॐ अद्य ……… गोत्रस्य पितुः ……… प्रेतस्य (…… गोत्रायाः मातुः ………. प्रेतायाः) आवरण काम इदं छत्रं उत्तानाङ्गिरो दैवतम् यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां अहं ददे ॥
5. पुनः त्रिकुश, तिल, जल, दक्षिणा लेकर दक्षिणा करे : ॐ अद्य कृतैतत् छत्र दान प्रतिष्ठार्थं एतावत् द्रव्यमूल्यकं हिरण्यं अग्नि दैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां अहं ददे ॥ उत्तराग्र त्रिकुशा (दर्भबटु) पर दे।

गरुड पुराण में छत्रदान से असिपत्रवन नामक नरक के मार्ग में तीक्ष्ण आतप को तरने का उल्लेख का उल्लेख मिलता है

तीक्ष्णातपं च तरतिच्छत्रोपानत्प्रदो नरः ॥
यद्यदिष्टतमं लोके यच्चास्य दयितं गृहे ॥

स्कन्दपुराण वैशाख माहात्म्य में वैशाख मास में छत्र दान का उल्लेख का उल्लेख मिलता है
सलिलं सलिलेच्छूनां छत्रं छायामपीच्छताम् । व्यजनं व्यजनेच्छूना वैशाखे मासि भूमिप ।।
जलं छत्रं च व्यजनं दानं येषां विशिष्यते । माधवे मासि संप्राप्ते ब्राह्मणाय कुटुम्बिने ।।

यहीं पर आगे वैशाख मास में हेमकान्त द्वारा त्रित मुनि को छत्रदान से हेमकान्त का उद्धार का प्रसंग आता है जो इस प्रकार है -

नारदजी कहते हैं एक समय विदेहराज जनक के घर दोपहर के समय श्रुतदेव नाम से विख्यात एक श्रेष्ठ मुनि पधारे, जो वेदों के ज्ञाता थे उन्हें देख कर राजा बड़े उल्लास के साथ उठ कर खड़े हो गये और मधुपर्क आदि सामग्रियों से उनकी विधि पूर्वक पूजा करके राजा ने उनके चरणोदक को अपने मस्तक पर धारण किया। इस प्रकार स्वागत सत्कार के पश्चात् जब वे आसन पर विराजमान हुए, तब विदेहराज के प्रश्न के अनुसार वैशाख मास के माहात्म्य का वर्णन करते हुए वे इस प्रकार बोले।

छाता/छत्र दान

श्रुतदेवने कहा राजन जो लोग वैशाख मास में धूप से सन्तप्त होने वाले महात्मा पुरुषों के ऊपर छाता लगाते हैं, उन्हें अनन्त पुण्य की प्राप्ति होती है। इस विषय में एक प्राचीन इतिहास का उदाहरण दिया करते हैं। पहले वंगदेश में हेमकान्त नाम से विख्यात एक राजा हो गये हैं। वे कुशकेतु के पुत्र परम बुद्धिमान् और शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ थे। एक दिन वे शिकार खेलने में आसक्त होकर एक गहन वन में जा घुसे वहाँ अनेक प्रकार के मृग और वराह आदि जन्तुओं को मारकर जब वे बहुत थक गये, तब दोपहर के समय मुनियों के आश्रम पर आये।
उस समय आश्रम पर उत्तम व्रत का पालन करने वाले शर्तरचि नाम वाले ऋषि समाधि लगाये बैठे थे, जिन्हें बाहर के कार्यो का कुछ भी भान नहीं होता था। उन्हें निश्चल बैठे देख राजा को बड़ा क्रोध हुआ और उन्होंने उन महात्माओं को मार डालने का निश्चय किया। तब उन ऋषियों के दस हजार शिष्यों ने राजा को मना करते हुए कहा- ओ खोटी बुद्धि वाले नरेश! हमारे गुरु लोग इस समय समाधि में स्थित हैं, बाहर कहाँ क्या हो रहा है-इसको ये नहीं जानते। इसलिये इन पर तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिये।'

तब राजा ने क्रोध से विह्वल होकर शिष्यों से कहा द्विजकुमारो मैं मार्ग से थका-माँदा यहाँ आया हूँ। अत: तुम्हीं लोग मेरा आतिथ्य करो। राजा के ऐसा कहने पर वे शिष्य बोले-'हम लोग भिक्षा माँग कर खाने वाले हैं। गुरुजनों ने हमें किसी के आतिथ्य के लिये आज्ञा नहीं दी है। हम सर्वथा गुरु के अधीन हैं। अत: तुम्हारा आतिथ्य कैसे कर सकते हैं।' शिष्यों का यह कोरा उत्तर पाकर राजा ने उन्हें मारने के लिये धनुष उठाया और इस प्रकार कहा-'मैंने हिंसक जीवों और लुटेरों के भय आदि से जिनकी अनेकों बार रक्षा की है, जो मेरे दिये हुए दानों पर ही पलते हैं, वे आज मुझे ही सिखलाने चले हैं।

ये मुझे नहीं जानते, ये सभी कृतघ्न और बड़े अभिमानी हैं इन आततायियों को मार डालने पर भी मुझे कोई दोष नहीं लगेगा।' ऐसा कह कर वे कुपित हो धनुष से बाण छोड़ने लगे बेचारे शिष्य आश्रम छोड़कर भय से भाग चले। भागने पर भी हेमकान्त ने उनका पीछा किया और तीन सौ शिष्यों को मार गिराया। शिष्यों के भाग जाने पर आश्रम में जो कुछ सामग्री थी उसे राजा के पापात्मा सैनिकों ने लूट लिया। राजा के अनुमोदन से ही उन्होंने वहाँ इच्छानुसार भोजन किया। तत्पश्चात् दिन बीतते-बीतते राजा सेना के साथ अपनी पुरी में आ गये राजा कुशकेतु ने जब अपने पुत्र का यह अन्यायपूर्ण कार्य सुना,

तब उसे राज्य करने के अयोग्य जानकर उसकी निन्दा करते हुए उसे देश निकाला दे दिया। पिता के त्याग देने पर हेमकान्त घने वन में चला गया। वहाँ उसने बहुत वर्षो तक निवास किया। ब्रह्महत्या उसका सदा पीछा करती रहती थी, इसलिये वह कहीं भी स्थिरता पूर्वक रह नहीं पाता था । इस प्रकार उस दुष्टात्मा के अट्ठाईस वर्ष व्यतीत हो गये। एक दिन वैशाख मास में जब दोपहर का समय हो रहा था, महामुनि त्रित तीर्थ यात्रा के प्रसंग से उस वन में आये। वे धूप से अत्यन्त संतप्त और तृषा से बहुत पीड़ित थे, इसलिये किसी वृक्षहीन प्रदेश में मूर्छित होकर गिर पड़े।

दैवयोग से हेमकान्त उधर आ निकला; उसने मुनि को प्यास से पीड़ित, मूर्छित और थका-माँदा देख उन पर बड़ी दया की। उसने पलाश के पत्तों से छत्र बनाकर उनके ऊपर आती हुई धूप का निवारण किया। वह स्वयं मुनिके मस्तक पर छाता लगाये खड़ा हुआ और तूँबी में रखा हुआ जल उनके मुँह में डाला। इस उपचार से मुनि को चेत हो आया और उन्होंने क्षत्रिय को दिये हुए पत्ते के छातेको लेकर अपनी व्याकुलता दूर की। उनकी इन्द्रियों में कुछ शक्ति आयी और वे धीरे-धीरे किसी गाँव में पहुँच गये। उस पुण्य के प्रभाव से हेमकान्त की तीन सौ ब्रह्महत्याएँ नष्ट हो गयीं।

इसी समय यमराज के दूत हेमकान्त को लेने के लिये वन में आये। उन्होंने उसके प्राण लेने के लिये संग्रहणी रोग पैदा किया। उस समय प्राण छूटने की पीड़ा से छटपटाते हुए हेमकान्त ने तीन अत्यन्त भयंकर यमदूतों को देखा, जिनके बाल ऊपर की ओर उठे हुए थे। उस समय अपने कर्मों को याद करके वह चुप हो गया। छत्र-दान के प्रभाव से उसको भगवान् विष्णु का स्मरण हुआ। उसके स्मरण करने पर भगवान् महाविष्णु ने विष्वक्सेन से कहा-'तुम शीघ्र जाओ, यमदूतों को रोको, हेमकान्त की रक्षा करो। अब वह निष्पाप एवं मेरा भक्त हो गया है।

उसे नगर में ले जाकर उसके पिता को सौंप दो। साथ ही मेरे कहने से कुशकेतु को यह समझाओ कि तुम्हारे पुत्र ने अपराधी होने पर भी वैशाख मास में छत्र-दान करके एक मुनि की रक्षा की है। अत: वह पापरहित हो गया है। इस पुण्य के प्रभाव से वह मन और इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला दीर्घायु, शूरता और उदारता आदि गुणों से युक्त तथा तुम्हारे समान गुणवान् हो गया है। इसलिये अपने इस महाबली पुत्र को तुम राज्य का भार सँभालने के लिये नियुक्त करो। भगवान् विष्णु ने तुम्हें ऐसी ही आज्ञा दी है। इस प्रकार राजा को आदेश देकर हेमकान्त को उनके अधीन करके यहाँ लौट आओ।'

भगवान् विष्णु का यह आदेश पाकर महाबली विष्वक्सेन ने हेमकान्त के पास आकर यमदूतों को रोका और अपने कल्याणमय हाथों से उसके सब अंगों में स्पर्श किया। भगवद्भक्त के स्पर्श से हेमकान्त की सारी व्याधि क्षण भर में दूर हो गयी। तदनन्तर विष्पकसेन उसके साथ राजा की पुरी में गये। उन्हें देखकर महाराज कुशकेतु ने आश्चर्ययुक्त हो

भक्तिपूर्वक मस्तक झुका कर पृथ्वी पर साष्टांगकर घर में प्रवेश कराया वहाँ नाना प्रकार के स्तोत्रों से इनकी स्तुति तथा वैभवों से उनका पूजन किया। तत्पश्चात् महाबली विष्वक्सेन ने अत्यन्त प्रसन्न होकर राजा को हेमकान्त के विषय में भगवान् विष्णु ने जो सन्देश दिया था, वह सब कह सुनाया। उसे सुनकर कुशकेतु ने पुत्र को राज्य पर बिठा दिया और स्वयं विष्वक्सेन की आज्ञा लेकर उन्होंने पत्नी सहित वन को प्रस्थान किया।

तदनन्तर महामना विष्वक्सेन हेमकान्त से पूछकर और उसकी प्रशंसा करके श्वेतद्वीप में भगवान् विष्णु के समीप चले गये तब से राजा हेमकान्त वैशाख मास में बताये हुए भगवान् की प्रसन्नता को बढ़ाने वाले शुभ धर्मो का प्रतिवर्ष पालन करने लगे। वे ब्राह्मणभक्त, धर्मनिष्ठ, शान्त, जितेन्द्रिय, सब प्राणियों के प्रति दयालु और सम्पूर्ण यज्ञों की दीक्षा में स्थित रहकर सब प्रकार की सम्पदाओं से सम्पन्न हो गये। उन्होंने पुत्र-पौत्र आदि के साथ समस्त भोगों का उपभोग करके भगवान् विष्णु का लोक प्राप्त किया। वैशाख सुख से साध्य, अतिशय पुण्य प्रदान करने वाला है। पापरूपी इन्धन को अग्नि की भाँति जलाने वाला, परम सुलभ तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–चारों पुरुषार्थों को देने वाला है।

प्रत्येक मनुष्य में अपने जीवन काल में छाता दान अवश्य करना चाहिए। कोशिश करें प्रत्येक वर्ष श्राद्ध के समय तो करें ही साथ ही विशेष दान काल में भी जरूर करें।

शुभकामनाओं सहित,
लोकेश अग्रवाल
EssenceOfAstrology